The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-2, July 2022
www.theresearchdialogue.com

"किशोर छात्रों के आक्रामक व्यवहार पर आत्म–सम्मान की शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन"

मयंक वर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर,
स्कूल ऑफ एजुकेशन,
एम आई ई टी ,मेरठ
Email- mayankcandy@gmail.com
Mobile- 7302996537

अशोक कुमार शर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर,
स्कूल ऑफ एजुकेशन,
एम आई ई टी ,मेरठ
Email- aksharma6766@gmail.com
Mobile- 9627425152

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मेरठ मंडल के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा–11 एवं 12 के किशोर छात्रों के आक्रमक व्यवहार पर आत्मसम्मान की शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन किया गया । अध्ययन हेतु शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया। प्रदत्तो के संतुलन हेतु डॉ जी. पी. माथुर एवं राजकुमारी भटनागर की '' एग्रेशन स्केल'' तथा आत्म–सम्मान के मापन हेतु स्वयं निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। न्यादर्श के रूप में मेरठ मंडल के माध्यमिक विद्यालयों में अध्यनरत 180 आक्रामक किशोरों तथा 210 सामान्य किशोरों, कुल 390 किशोरों का चयन किया गया, प्राप्त प्रदत्तो का सांख्यिकी विश्लेषण करके निष्कर्ष निकाले गए इसमें माध्य, मानक विचलन, टी – परीक्षण, एवं सहसंबंध गुणांक ज्ञात किए गए । निष्कर्ष रूप में आक्रामक किशोरों एवं सामान्य किशोरों के आत्म – सम्मान तथा आक्रामक व्यवहार में सार्थक अंतर होता है। तथा इन किशोरों के आक्रामक व्यवहार पर आत्म–सम्मान की शिक्षा का प्रभाव पड़ता है।

key words: आक्रामक किशोर, सामान्य किशोर, आक्रामक व्यवहार, आत्म–सम्मान की शिक्षा

प्रस्तावना

जैसे–जैसे बालक का विकास होता है वैसे–वैसे वह अपने तथा अन्य लोगों के बीच अंतर करना सीखता है। इससे वह आत्मसम्मान व आत्मछवि विकसित करता है। आज के दौर में प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी परिप्रेक्ष्य में दूसरे व्यक्ति पर अधिकार करने की मानसिकता रखता है। जिसके लिए वह हिंसा, क्रोध आदि दुष व्यवहारों का प्रयोग करने लगता है। वर्तमान समय में ये हिंसा, आक्रमकता सब तरह तबाही का मंजर पैदा कर रही हैं। इस आक्रामक मानसिकता व इससे उत्पन्न विध्वंस दौर से शिक्षा द्वारा ही मानसिक व व्यवहारिक शांतिपूर्ण वातावरण का विकास संभव है।.हमारी आत्मछवि हमारे आत्म–सम्मान का निर्धारण करती है। और आत्म–सम्मान द्वारा ही व्यक्ति के प्रमुख गुण जैसे – उसके व्यवहार, रवैया, स्वभाव व व्यक्तित्व आदि का निर्माण होता है। दैनिक जीवन के व्यवहार में भी आक्रामकता शामिल हो चुकी है। कुछ शोधों द्वारा ज्ञात हुआ है कि 5% तक किशोर अवसाद के लक्षणों का अनुभव करते हैं। **(ननकी 1996)** वर्तमान समय में किशोरावस्था में मृत्यु का तीसरा सबसे प्रमुख कारण ''आत्महत्या'' ही है । जोकि 25 साल पहले की तुलना में चार गुना है। अध्ययनों द्वारा पता चला है कि एक तिहाई के लगभग किशोर कम आत्म–सम्मान का अनुभव कर ज्यादातर प्रारंभिक किशोरावस्था में जीवन में संघर्ष कर रहे हैं। **(हार्टर 1990, हिर्च एंड इवाईस 1991)** कम आत्म–सम्मान का परिणाम अस्थाई हो सकता है। परंतु गंभीर मामलों में अवसाद, आक्रामकता, एनोरेक्सिया तथा आत्महत्या जैसी कई समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। हालांकि मुख्यतः व्यक्तित्व अध्ययन सकारात्मक परिणाम की रिपोर्ट दर्शाते हैं। **स्कोर (2008)** के शब्दों में शैक्षिक तनाव, शैक्षिक आवश्यकता से संबंधित मांग है। विद्यार्थी व्यक्तिगत रूप से प्राप्त करना चाहता है छात्र के शैक्षिक तनाव को नियंत्रण ना करने की दशा में इसके परिणाम गंभीर मानसिक, सामाजिक, व्यवहारिक व संवेगात्मक रूप में उत्पन्न हो सकते हैं। आक्रमक व्यवहार को मुख्यतः आवेगी प्रतिक्रिया के रूप में समझा जाता है। जोकि हिंसक तथा अप्रत्याशित हो सकता है। मूल रूप से किशोरों को स्वयं (आत्म – छवि), घर, स्कूल और समाज से संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस कारण भी किशोरों में आक्रमकता उत्पन्न हो जाती है। इसको दूर करने के लिए आत्म–सम्मान की शिक्षा अपनी एक प्रमुख भूमिका निर्वाह कर सकती है। अतः प्रस्तुत शोध द्वारा किशोरों के आक्रामक व्यावहार पर उनकी आत्मा–सम्मान की शिक्षा द्वारा क्या प्रभाव पड़ा ? इस अध्ययन द्वारा इस बात का अध्ययन किया गया।

शोध संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

साड़ी, हॉनरमण्ड, नजरियन अहादी और अस्करी (2012) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में आक्रामकता कम करने हेतु भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रशिक्षण के प्रभाव का मूल्यांकन नामक शीर्षक पर शोध किया। इसमें उन्होंने

पाया कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रशिक्षण के प्रभाव से छात्रों की आक्रामकता को कम किया जा सकता है तथा सामाजिक अनुकूलता को बढाया जा सकता है।

हुआंग, वांग और चांग (चेन,2012) ने बच्चों में आक्रामकता, सहकर्मी संबंध तथा अवसाद के बीच संबंधों का अध्ययन किया। इसमें उन्होंने पाया कि प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष आक्रामकता दोनों ही बच्चों के किशोरावस्था में पहुंचने पर सहकर्मी संबंधों में कमी करती है तथा अवसाद को बढ़ाती है।

जोशी, चंद्रवती और रिजवान मोहम्मद (2015) द्वारा किशोरों के आक्रामक व्यवहार का शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव नामक शीर्षक पर अध्ययन किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में उन्होंने पाया कि छात्राओं का आक्रामक स्तर छात्रों की तुलना में अधिक होता है। निम्न शैक्षिक निष्पत्ति वाली छात्राओं में निम्न आक्रामकता स्तर तथा उच्च शैक्षिक निष्पत्ति वाली छात्रा में उच्च आक्रमकता स्तर होता है।

जोहल और कोर (2015) ने किशोरों के आक्रामक व्यवहार तथा माता–पिता के व्यवहार के बीच संबंधों का अध्ययन नामक शीर्षक पर अपना शोध कार्य किया। इसमें उन्होंने पाया कि माता–पिता के दुर्व्यवहार तथा किशोरों के आक्रामक व्यवहार के बीच सकारात्मक सार्थक संबंध होता है।

जैन, इंद्रा (2017) ने जैन दर्शन में निहित शांति शिक्षा के तत्व एवं विद्यालय पाठ्यक्रम में उनकी प्रासंगिकता नामक शीर्षक पर अपना शोध कार्य किया। इसमें उन्होंने पाया कि जैन दर्शन में निहित शांति के तत्वों जैसे – सत्य , अहिंसा अपरिग्रह आदि का वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

लाजवंती, सत्संगी, रंजीत, कौर एवं कुमार संजय (2018) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में शैक्षिक तनाव, आक्रामक व्यवहार एवं सामाजिक संवेदनशीलता पर क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन नामक शीर्षक पर शोध कार्य किया।

खरें, कनिका (2020) ने किशोर आक्रामकता एवं समायोजनः एक अध्ययन नामक शीर्षक पर शोध कार्य किया। इसमें उन्होंने पाया कि सामान्य छात्रों में समायोजन करने की क्षमता अधिक होती है जबकि आक्रामक छात्रों में समायोजन करने की क्षमता का अभाव पाया जाता है।

अध्ययन का महत्व

संबंधित साहित्य के सर्वेक्षणानुसार कहा जा सकता है कि अभी तक किशोरों के आक्रामक व्यवहार पर उनके आत्मा–सम्मान की शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन नहीं किया गया है अतः इस अध्ययन की आवश्यकता प्रतिपादित होती है। इस समस्या के चयन हेतु शोधार्थी के मस्तिष्क में निम्न जिज्ञासा एवं प्रसन्न चिन्ह हैं

- क्या छात्रों के आक्रामक व्यवहार पर आत्म–सम्मान की शिक्षा का प्रभाव पड़ता है ?

- क्या छात्रों के आक्रमक व्यवहार को नियंत्रित किया जा सकता है ?
- क्या छात्रों को उचित आत्म–सम्मान की शिक्षा देकर उनकी आक्रामकता को दूर किया जा सकता है ?

उपरोक्त तथा अन्य इस प्रकार के सभी प्रश्नों का हल प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा ढूंढने का प्रयास किया गया। प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा प्राप्त निष्कर्ष छात्रों उनके परिवार, विद्यालय, समाज तथा राष्ट्र के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होंगे।

शोध शीर्षक

'' छात्रों के आक्रामक व्यवहार पर आत्म–सम्मान की शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन''

शोध अध्ययन में प्रयुक्त पदों की व्याख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का अभिप्राय निम्नानुसार है –

किशोरावस्था

किशोरावस्था मानव जीवन के विकास की सबसे महत्वपूर्ण अवस्था होती है। किलपैट्रिक के अनुसार –'' यह जीवन का सबसे कठिन काल है'' किशोरावस्था एक ऐसी अवधि है जिसमें बढ़ता हुआ व्यक्ति बचपन से परिपक्वता की ओर संक्रमण करता है।

आक्रामक व्यवहार

आक्रामक व्यवहार एक ऐसा व्यवहार है जो शारीरिक, मौखिक या प्रतीकात्मक रूप से व्यक्त किया जाता है। यह एक व्यक्ति द्वारा किया गया कोई भी व्यवहार है जिसका उद्देश्य दूसरे लोगों को दर्द पीड़ा या क्षति पहुंचाना है।

आत्म–सम्मान

आत्म–सम्मान वह समग्र दृष्टिकोण है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपने स्वयं के मूल्यों और महत्त्व में संबंध बनाए रखता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1.आक्रमक किशोरों एवं सामान्य किशोरों में आत्म–सम्मान का अध्ययन करना।

2.आक्रामक किशोरों एवं सामान्य किशोरों में आक्रामक व्यवहार का अध्ययन करना।

3.आक्रामक किशोरों एवं सामान्य किशोरों पर आत्मसम्मान की शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

1.आक्रमक किशोरों एवं सामान्य किशोरों के आत्म–सम्मान में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता हैं।

2.आक्रामक किशोरों एवं सामान्य किशोरों में आक्रामक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता हैं।

3. आक्रामक किशोरों एवं सामान्य किशोरों पर आत्म–सम्मान की शिक्षा का सार्थक प्रभाव नही पड़ता है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मेरठ मंडल के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा–11 एवं कक्षा – 12 के छात्रों को लिया गया। कुल 390 छात्रों, जिनमें 180 आक्रमक छात्रों तथा 210 सामान्य छात्रों का चयन किया गया।

शोध उपकरण

1. आक्रामक व्यवहार के मापन हेतु जी. पी.माथुर एवं राजकुमारी भटनागर द्वारा निर्मित ''एग्रेशन स्केल'' का प्रयोग किया गया।

2. आत्म–सम्मान के मापन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध कार्य में एकत्रित आंकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यिकी का प्रयोग किया गया –

- मध्यमान
- मानक विचलन
- टी–परीक्षण

- सहसंबंध

अध्ययन की परिसीमाएं

प्रस्तुत अध्ययन में मेरठ मंडल के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले कक्षा – 11 एवं 12 के छात्र–छात्राओं को ही शामिल किया गया है।

प्रदत्तो का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना–1 आक्रामक किशोरों एवं सामान्य किशोरों के आत्म–सम्मान में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी-मूल्य
आक्रामक किशोर	180	50.2	7.43	3.81
सामान्य किशोर	210	54.26	8.05	

df 388 पर सारणीमान (i) 5% विश्वास के स्तर पर 1.97

(ii) 1% विश्वास के स्तर पर 2.59

उपर्युक्त सारणी से ही स्पष्ट है कि आक्रामक किशोरों का माध्य 50.2 मानक विचलन 7.43 प्राप्त होता है। तथा सामान्य किशोरों का माध्य 54.26 व मानक विचलन 8.05 प्राप्त होता है। गणना करने पर टी–मूल्य 3. 81 प्राप्त हुआ। यह मान 1% विश्वास स्तर के 2.59 मान से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। तथा कहा जा सकता है कि आक्रामक किशोरों एवं सामान्य किशोरों के आत्म–सम्मान में अंतर होता है।

परिकल्पना –2 आक्रामक किशोरों एवं सामान्य किशोरों के आक्रामक व्यवहार में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी-मूल्य
आक्रामक किशोर	180	50.60	7.40	

सामान्य किशोर	210	54.80	7.90	4.10

df 388 पर सारणीमान (i) 5% विश्वास के स्तर पर 1.97

(ii) 1% विश्वास के स्तर पर 2.59

उपर्युक्त सारणी से ही स्पष्ट है कि आक्रामक किशोरों का माध्य 50.60 व मानक विचलन 7.40 प्राप्त होता है। तथा सामान्य किशोरों का माध्य 54.80 व मानक विचलन 7.90 प्राप्त होता है। गणना करने पर टी–मूल्य 4.10 प्राप्त हुआ। यह मान 1% विश्वास स्तर के 2.59 मान से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। तथा कहा जा सकता है कि आक्रामक किशोरों एवं सामान्य किशोरों के आक्रामक व्यवहार में अंतर होता है।

परिकल्पना –3 आक्रामक किशोरों एवं सामान्य किशोरों पर आत्म–सम्मान की शिक्षा का सार्थक प्रभाव नही पड़ता है।

चर	**सह संबंध**	**सार्थकता स्तर**
आक्रामकता	+0.327	0.01
आत्म सम्मान		

df 388 के लिए 0.01 का मान= 0.110

388 के लिए 0.05 का मान= 0.085

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि किशोरों की आक्रामकता तथा आत्म–सम्मान के मध्य धनात्मक 0.327 सहसंबंध प्राप्त हुआ जो कि 99% विश्वास स्तर का df 388 सार्थकता स्तर 0.01 से बहुत अधिक है। अतः परिकल्पना–3 आक्रामक किशोरों एवं सामान्य किशोरों पर आत्म सम्मान की शिक्षा का सार्थक प्रभाव पड़ता है को स्वीकृत किया जाता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ है कि आक्रामक किशोरों एवं सामान्य किशोरों के आत्म सम्मान तथा आक्रामक व्यवहार में सार्थक अंतर होता है। तथा इन किशोरों के आक्रामक व्यवहार पर आत्म–सम्मान की शिक्षा का प्रभाव पड़ता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- रोसेनबर्ग, एम. (1985) : समाज और किशोर आत्म छवि, प्रिंसटन एन.जे. प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।
- गुप्ता, एस.पी.(2008): उच्चतर समाज मनोविज्ञान, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
- लाजवंती एवं कुमार, संजय (2018): माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में शैक्षिक तनाव, आक्रामक व्यवहार एवं सामाजिक संवेदनशीलता प्रक्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन, शोध प्रबंध, दयालबाग एजुकेशन इंस्टीट्यूट डीम्ड यूनिवर्सिटी, आगरा।
- खर, कनिका (2020): किशोर आक्रामकता एवं समायोजन एक अध्ययन, जनरल ऑफ इंजीनियरिंग टेक्नोलॉजी एंड इनोवेटिव रिसर्च, वॉल्यूम– 7, इश्यू– 2, फरवरी–2020।
- लाल रमण बिहारी एवं जोशी सुरेश चंद 2021 अधिगमकर्ता का विकास और लाल बुक डिपो मेरठ
- मंगल, एस.के. एवं मंगल, शुभ्रा (2016): वृद्धि– उन्मुख अधिगमकर्ता, लायल बुक्स, मेरठ।
- तोमर, जया (2011): अधिगम में समर्थ एवं असमर्थ बालकों का सामाजिक एवं शैक्षिक तनाव का अध्ययन,दयालबाग, आगरा।

THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-2, July 2022
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number-July-2022/15

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

मयंक वर्मा एवं अशोक कुमार शर्मा

For publication of research paper title

"किशोर छात्रों के आक्रामक व्यवहार पर आत्म–सम्मान की शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-01, Issue-02, Month July, Year-2022.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com